प्रातःक्लास 16/7/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझा रहे हैं। बच्चे यह तो अच्छी रीत समझते हैं आत्माएँ शुरू में सभी पावन ही रहती हैं। हम ही पावन थे। पतित और पावन, आत्मा के लिए ही कहा जाता है। आत्मा पावन है तो सुख है। बुद्धि में आता है हम पावन बनेंगे तो पावन दुनिया के मालिक बनेंगे। इसके लिए ही पुरुषार्थ करते हैं। पावन दुनिया को तुम अच्छी रीत जानते हो। लाखों वर्ष की बात नहीं। तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले पावन दुनिया थी। इसमें भी आधा कल्प तुम पावन थे। बाकी रहा आधा कल्प। यह बातें और कोई समझ नहीं सकते। तुम्हारी बुद्धि में है हम 2500 वर्ष तक पावन थे। पावन दुनिया में रहते थे। पतित और पावन, सुख और दुख, दिन और रात आधा–आधा है। जो अच्छे समझदार हैं, जिन्होंने बहुत भक्ति की है वही अच्छी रीत समझेंगे। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों तुम पावन थे। नई दुनिया में थे। सिर्फ हम ही थे। बाकी जो इतने सभी हैं वह शान्तिधाम में थे। पहले2 हम पावन थे और बहुत थोड़े थे। फिर नम्बरवार मनुष्य सृष्टि वृद्धि को पाती रहती है। अभी तुम मीठे2 बच्चों को कौन समझा रहे हैं? बाप। आत्माओं को परमात्मा बाप समझाते हैं। इनको कहा जाता है संगम। इसको ही कुम्भ कहा जाता है। मनुष्य इस संगमयुग को बिल्कुल ही भूल गये हैं। बाबा ने समझाया है चार युग होते हैं। फिर साढ़े चार वा सवा चार कहेंगे; क्योंकि यह है छोटा लीप संगमयुग। इनकी आयु बहुत छोटी है। जैसे बाप समझाते हैं ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष। मैं इनके वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में। बच्चों को भी खातरी है बाप ने इसमें प्रवेश किया है। इनकी भी बायोग्राफी सुनाई है। इनके 84वें अन्त के जन्म में मैं प्रवेश करता हूँ। मैं तुम आत्माओं से बात करता हूँ। आत्मा ही सभी कुछ समझती करती है। आत्मा न हो तो शरीर कुछ भी न समझे। आत्मा शरीर से अलग है तो कुछ नहीं समझती है। दोनों का पार्ट इकट्ठा होता है। उनको जीवात्मा कहा जाता है। पवित्र जीवात्मा और पतित जीवात्मा। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित होता है। तुम बच्चों की बुद्धि में है सतयुग में बहुत थोड़े देवी–देवताएँ थे। फिर अपने लिए भी कहेंगे हम जीवात्माएँ सतयुग में जो पावन थे फिर वह 84 जन्मों बाद पतित बने हैं। पतित से पावन, पावन से पतित यह चक्र फिरता रहता है। याद भी उस बाप को ही याद करते हैं। हे पतित–पावन..... बच्चे जानते हैं हम जो पतित बन गये हैं उनको फिर बाप आकर पावन बनाते हैं। हर 5000 वर्ष बाद बाबा एक ही बार आते हैं। आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। और कौन करेगा। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी तो देवताएँ हैं। उन्हों को भगवान नहीं जाये। ऊँच ते ऊँच भगवान एक ही है। सिर्फ वही पुरानी दुनिया को नया बनावेंगे। नई को पुरानी कौन बनाते हैं वह भी समझाया है। 5 विकारों रूपी रावण। ऐसे भी नहीं रावण की कोई पूजा करते हैं। नहीं। दशहरे के दिन रावण को जलाते हैं; परन्तु जलता ही नहीं है। यह है ही आसुरी रावण की दुनिया। शिव को तो कोई जला न सके। रावण को जलाते हैं; क्योंकि रावण की(ही) देह अभिमानी बनाते हैं। दुश्मन को जलाया जाता है, मित्र को नहीं जलाया जाता। सर्व का मित्र एक ही बाप है जो सर्व की सद्गति करते हैं। उनको सभी याद करते हैं; क्योंकि वह है ही सभी को सुख देने वाला। तो जरूर दुख देने वाला भी कोई होगा। वह है 5 विकारों रूपी रावण। आधाकल्प होता है रावण राज्य। आधा कल्प रामराज्य। पूरा आधा2 होता है बराबर। फिर उस बराबर का आधा। आधा का क्वाटर। स्वस्तिका बनाते हैं ना। स्वस्तिका की पूजा करते हैं। उसका भी अर्थ बाप समझाते हैं। उसमें पूरा चौथा होता है। जरा भी कम जास्ती नहीं। यह ड्रामा बड़ा एक्युरेट है। कोई ..... हम इस ड्रामा से निकल जावें, बहुत दुखी हैं। इससे तो जाकर ज्योति ज्योत में समावें वा ब्रह्म में लीन हो जावें; परन्तु कोई भी जा नहीं सकते। अनेक प्रकार की क्या2 ख्यालातें करते रहते हैं भक्तिमार्ग में। प्रयत्न भी भिन्न2 प्रकार के करते हैं। सन्यासी शरीर छोड़ेंगे तो ऐसे कब नहीं कहेंगे कि स्वर्ग वा वैकुण्ठ पधारा। आत्माओं को स्वर्ग याद है। तुमको भी याद है। स्वर्ग और नर्क तुमको तो सबसे जास्ती याद है। स्वर्ग और नर्क दोनों की हिस्ट्री जॉगराफी तुमको मालूम है। और कोई

को पता नहीं है। तुमको भी पता नहीं था। बाप बैठ बच्चों को सभी राज़ बताते हैं। यह मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष है ना। वृक्ष का जरूर बीज भी होना चाहिए। यह जीवात्माओं का वृक्ष है। मूल है आत्माएँ। आत्माओं के बाप को भक्तिमार्ग ..... याद करते हैं। जानते कुछ भी नहीं हैं। बाप ही आकर याद कराते हैं और समझाते हैं पावन दुनिया कैसे पतित बनती है। फिर मैं पावन बनाता हूँ। पावन दुनिया को कहा जाता है स्वर्ग। हेविन। बच्चे समझते हैं स्वर्ग पास्ट हो गया है। फिर जरूर रिपीट होना चाहिए। इसलिए कहा जाता है यह वर्ल्ड रिपीट होती है। सृष्टि का तो उनको पता ही नहीं है। सिर्फ अक्षर जानते हैं वर्ल्ड की हिस्ट्री रिपीट। क्योंकि वर्ल्ड ही पुरानी सो नई – नई सो पुरानी होती है। बाप नई बनाते हैं फिर पुरानी होती है। रिपीट माना ही ड्रामा। ड्रामा अक्षर बहुत शोभनिक है। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है हूबहू। नाटक को हूबहू नहीं कहा जाता; क्योंकि नाटक तो बीच में बन्द भी हो जाता है। कोई बिमार हो पड़ते तो छूट्टी ले लेते हैं। उनको फिर ड्रामा नहीं कहेंगे। ड्रामा का हिन्दी अक्षर भी होगा। तो तुम बच्चों की बुद्धि में है हम पूज्य देवी–देवताएँ थे फिर पुजारी बने हैं। कल तो पूजा करते थे। आज करते नहीं हो। एक ही बाप आकर तुमको पावन बनाते हैं। पुजारी से पूज्य बनाते हैं। तुमको निश्चय है हम ही पूज्य थे। फिर बाप हमको पूज्य बनाने आये हैं। पतित से पावन बनने की युक्ति वही बताते हैं। जो 5000 वर्ष पहले बताई थी। सिर्फ कहते हैं हे बच्चों मुझ बाप को याद करो। पतित से पावन बनाने वाला एक ही बाप है। वह बाप ही सर्व की सद्गति भी करते हैं। बाकी जो भी देहधारी हैं वह दुर्गति को पहुँचाते हैं। बाप पहले2 तो तुमको आत्म–अभिमानी बनाते हैं। पहले2 यह सबक देते हैं बच्चे तुम अपन को आत्मा समझो। परमपिता परमात्मा को याद करो। इतना तुमको याद करता तुम फिर भी भूल जाते हो। भूलते ही रहेंगे जब तक ड्रामा का अन्त आये। अन्त में जब विनाश का समय होगा तब पढ़ाई पूरी होगी। फिर तुम शरीर छोड़ देंगे। ब्रह्म ज्ञान(नी) भी ऐसे कहते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जावें। इसलिए शरीर छोड़ने चाहते हैं। जैसे सर्प भी एक पुराना खल छोड़ देते है ना। तो बाप भी समझाते हैं तुम जब बैठते हो अथवा चलते–फिरते हो देही–अभिमानी हो रहो। आगे तुमको देह–अभिमान था। अभी बाप कहते हैं आत्म–अभिमानी बनो। देह–अभिमान में आने से तुमको 5विकार रूपी रावण पकड़ लेते हैं। आत्म–अभिमानी बनने से कोई विकार पकड़ेंगे नहीं। देही–अभिमानी बन बाप को बहुत ही प्यार से याद करना है। आत्माओं को परमात्मा बाप का प्यार मिलता है इस संगमयुग पर। इनको कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है। जबकि बाप और बच्चे आकर मिलते हैं। तुम आत्माएँ भी शरीर में हो। बाप भी शरीर में आकर तुमको निश्चय कराते हैं। बाप एक ही बार आते हैं जबकि सभी को वापस ले जाना है। समझाते भी हैं हम कैसे तुमको वापस ले जावेंगे। तुम कहते भी हो हम सभी पतित हैं। आप पावन हो। हम आत्माएँ पतित हैं। बाबा आप पावन आत्मा हैं। बाबा आकर हमको पावन बनाओ। तुम बच्चों को पता नहीं है कि बाबा कैसे पावन बनावेंगे। जब तक बनावे नहीं तब तक क्या जाने। यह भी तुम समझते हो आत्मा बिल्कुल सितारा है। जैसे तुम्हारी आत्मा इतनी छोटी है। बाप की भी ऐसी है। छोटा सितारा है, परन्तु वह ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। तुमको भी आप समान बनाते हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों में है जो फिर तुम औरों को समझाते हो। फिर सतयुग में तुम होंगे तो यह ज्ञान सुनावेंगे क्या? नहीं। ज्ञान उनको सुनाया जाता है जो अज्ञान में हैं। अज्ञान कहा जाता है भक्ति को। भक्ति और ज्ञान का अर्थ भी समझाना चाहिए। ज्ञान सागर तो एक ही बाप है जो तुमको पढ़ाते हैं। जीवन कहानी तो सभी की चाहिए ना। वह बाप सुनाते रहते हैं। यह बहुत समझने की बातें हैं; परन्तु तुम घड़ी2 भूल जाते हो। तुम्हारी है माया के साथ युद्ध। तुम फील करते हो बाबा को हम याद करते हैं फिर भूल जाते हैं। बाप कहते हैं माया है दुश्मन। तुमको भूला ही देती है। अर्थात् बाप से बेमुख कर देती है। तुम बच्चे एक ही बार बाप के सम्मुख आते हो। बाप एक ही बार वरसा देते हैं। बस। फिर बाप को सम्मुख आने की दरकार ही नहीं। पापात्मा से पुण्य–आत्मा स्वर्ग का मालिक बनाया। बस। फिर क्या आकर करेंगे। तुमने बुलाया और मैं बिल्कुल पूरे टाइम पर आया।

हर 5000 वर्ष मैं अपने टाइम पर आता हूँ। यह किसको भी पता नहीं है शिवरात्रि क्यों मनाते हैं। उसने क्या किया है किसको भी पता नहीं है। इसलिए शिवरात्रि को होली डे आदि कुछ नहीं मनाते हैं। औरों की होली डे करते हैं। और शिवबाबा आते हैं, इतना पार्ट बजाते हैं इनका कोई को पता भी नहीं पड़ता। अर्थ ही नहीं जानते। सो बाप बैठ समझाते हैं। भारत में कितना अज्ञान है। शिवबाबा भी कहते हैं, शिवबाबा ही भगवान है। तो हम भगवान के बच्चे जरूर भगवान भगवती होनी चाहिए। यह ल0ना0 भगवान के बच्चे कहेंगे ना। भगवान भगवती बनाते हैं; क्योंकि प्रवृत्ति मार्ग है ना। किसको भी यह पता नहीं है। शिवबाबा ही ऊँच ते ऊँच है। तो जरूर मनुष्यों को ऊँच ते ऊँच बनावेंगे। है ही मनुष्य सृष्टि तो जरूर मनुष्यों को ही बनावेंगे ना। बाप कहते हैं मैंने इनको ज्ञान दिया योग सिखाया फिर यह नर से नारायण बना। इन्होंने यह नालेज सुनी है। कहते हैं हम ऐसे श्री ल0ना0 बनेंगे। यह ज्ञान भारत के लिए ही है। और किसके लिए शोभता भी नहीं। तुमको ही फिर से बनना है। और कोई नहीं बनते। यह है ही नर से नारायण बनने की कथा। और जिन्होंने धर्म स्थापन किये हैं सभी पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बने हैं। फिर उन सभी को सतोप्रधान बनना ही है। उस पद के अनुसार फिर रिपीट करेगा। ऊँच पार्टधारी बनने लिए तुम कितना पुरुषार्थ करते हो। कौन पुरुषार्थ करा रहे हैं बाबा। ऊँच ते ऊँच बाप है ना। यह कौन कहते हैं? आत्मा कहती है शरीर द्वारा। तुम ऊँच बन जाते हो फिर कब याद भी नहीं करते हो। स्वर्ग में थोड़े ही कहेंगे ऊँच ते ऊँच भगवान। यहाँ तुमको बनाते हैं तो तुम याद करते हो। ऊँच ते ऊँच बाप फिर बनाते भी ऊँच ते ऊँच हैं। नारायण से पहले तो श्रीकृष्ण हैं। फिर तुम ऐसे क्यों कहते हो नर से ना0 बने। क्यों नहीं कहते हो नर से कृष्ण बने। पहले2 नारायण थोड़े ही बनेंगे। पहले तो श्रीकृष्ण प्रिन्स ही बनेंगे ना। बच्चा तो फूल होता है। वह तो फिर भी युगल बन जाते हैं। महिमा ब्रह्मचारी की होती है। छोटे बच्चे को सतोप्रधान कहा जाता है। बूढ़ा हुआ तो उनको तमोप्रधान कहेंगे। तो तुम बच्चों को ख्याल में आना चाहिए हम पहले2 जरूर प्रिन्स–प्रिन्सेज बनेंगे। बाप कहते हैं अभी तुम नर से ना0 नारी से ल0 बनने वाले हो। गाया भी जाता है बैगर टू प्रिन्स। बैगर किसको कहा जाता है? आत्मा को शरीर साथ बैगर वा साहुकार कहते हैं। इस समय तुम जानते हो सभी बैगरस बन जावेंगे। सभी खत्म हो जाने हैं शरीर सहित। तुमको इस समय ही बैगर बनना है। पाई पैसा जो कुछ है खत्म हो जावेंगे। आत्मा को अभी बैगर बनना है। सभी कुछ छोड़ना है। फिर प्रिन्स बनना है। तुम जानते हो धन–दौलत आदि सभी छोड़ बैगर ब.... हम घर जावें। फिर नई दुनिया में प्रिन्स बनकर आवेंगे। जो कुछ भी है सभी को छोड़ना है। यह पुरानी चीज़ कोई काम की नहीं है। आत्मा पवित्र हो जावेगी। फिर यहाँ आवेंगे पार्ट बजाने कल्प पहले मिसल। जितना2 तुम धारणा करेंगे उतना ही ऊँच पद मिलने का है। भल इस समय किसको 5करोड़ हैं, सभी खत्म हो जावेंगे। अभी(सभी) बैगर बन जावेंगे। फिर नई दुनिया में सभी कुछ नया मिलेगा। हम फिर से अपनी नई दुनिया में जाते हैं। यहाँ तुम आते ही हो नई दुनिया में जाने लिए। कोई सतसंग नहीं जिसमें कोई समझे हम नई दुनिया के लिए पढ़ रहे हैं। ऐसा कोई कह न सके। तुम बच्चों की बुद्धि में है बाबा पहले हमको बैगर बनाये फिर प्रिन्स बनाते हैं। देह के सभी सम्बन्ध छोड़ा तो बैगर ठहरा ना। कुछ भी नहीं। फिर अभी भारत में कुछ भी नहीं है। भारत अभी बैगर इनसालवेन्ट है। फिर सालवेन्ट होगा। कौन बनते हैं? आत्मा शरीर द्वारा बनती है। अभी सभी आत्मा इस शरीर द्वारा इनसालवेन्ट है। गवर्मेन्ट इनसालवेन्ट है। राजा रानी भी है नहीं। वह भी इनसालवेन्ट है। राजा–रानी का ताज भी नहीं है। न वह ताज है न रत्न जड़ित ताज है। राजाई ही नहीं है। बाकी अंधेरे नगरी..... सभी सर्वव्यापी कह देते हैं। गोया सभी में भगवान है। सभी एक समान हैं। कुत्ते–बिल्ले सभी में है। इसको कहा जाता है अंधेर नगरी..... तुम ब्राह्मणों की रात थी। अभी समझते हो ज्ञान दिन आ रहा है। सतयुग में सभी(ी) जागती ज्योत हैं। अभी दीवा बिल्कुल डल हो गया है। भारत में ही दीवा जगाने की रसम है। और कोई थोड़े ही दीवा जगाते हैं। तुम्हारी ज्योत बुझी हुई है। आत्मा तमोप्रधान बन गई है। तुम सतोप्रधान थे तो विश्व के

मलिक थे। वह ताकत कम होते2 अभी कुछ भी ताकत नहीं रही है। वह बाप आये हैं तुमको ताकत देने। बैटरी भरते हैं। आत्मा को परमात्मा की याद में रहने से बैटरी भरती है। मार्जिन भी जरूर रहती है। इसलिए ही फिचर्स सभी की न्यारी है। एक न मिले दूसरे से। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती है। तो आवेंगे वही जिनको पार्ट मिला हुआ है भिन्न2 फिचर्स का। फिर जरूर रिपीट होगा। ल0ना0 के जो फिचर्स हैं वह कल्प–कल्प होंगे। इसमें फर्क नहीं पड़ सकता। आत्मा अविनाशी है तो फिचर्स भी अविनाशी है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। फिर कल्प2 वही लेंगे। यह नई बात बाप बैठ समझाते हैं। तुम समझते हो बरोबर बाबा राइट बताते हैं। हम भी पहले अनराइट्स थे। अभी राइटियस बन रहे हैं। बाबा हर एक बात पर कितना समझाते हैं। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती है। फिर वही फिचर्स होंगे। कल्प2 जो फिचर्स बने हैं वही मिलते रहेंगे। नाम भी वही मिलेगा। कुछ भी फर्क नहीं पड़ सकता। हरेक आत्मा का नाम फीचर्स वही रहेगी; क्योंकि यह बना बनाया ड्रामा है। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। छोटी बुद्धि वाले धारण कर न सके। जो सुनकर फिर सुनाते रहते हैं वही फिर धारण कर सकते हैं। धन दान करते रहेंगे तो धन मिलता रहेगा। दान ही न करेंगे तो धारणा कैसे होगी। कोई तो बहुत सर्विस करते हैं कोई कुछ भी नहीं। ऐसी2 महीन बातें धारण भी हो ना। अभी जो सिकल है वह फिर न रहेगी। सेकण्ड व सेकण्ड चक्र फिरता रहता है। टिक2 होती रहती है। घड़ी की भी टिक2 होती है ना। आगे भी यह घड़ियाँ नहीं थीं। दिन प्रतिदिन कारीगरी से नई2 चीज़े बनाते रहते हैं। घड़ियों में एक होती है लीवर, दूसरा होता है सलेन्डर। लीवर एक्युरेट होती है। बाप कहते हैं तुमको लीवर बनना है। यह भी पक्का2 समझाते हो बाबा ही पतित पावन ज्ञान का सागर है। वही सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का राज़ समझाते हैं। यह ज्ञान तुमको अभी ही मिलता है। ऐसे नहीं कि परमपरा से चला आता है। नहीं। ज्ञान की प्रारब्ध मिलती है सुख। फिर भक्ति से होता है दुख। ज्ञान है दिन। भक्ति है रात। सुख और दुख का खेल बना हुआ है। कैसे बना है वह बाप बैठ समझाते हैं। यह भी समझते हैं सभी एकरस तो पढ़ न सके। स्टुडेन्ट पढ़ते हैं कब एकरस मार्कस थोड़े ही मिलती है। हरेक का अपना2 पार्ट है। यह अविनाशी खेल है। तुम्हारा पार्ट भी अविनाशी है। वह समझते हैं हम मोक्ष को पा लेवें। दुख से छूट जावेंगे; परन्तु एक भी छूट नहीं सकता। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। इस चक्र को भी सिवाय तुम्हारे और कोई नहीं जानते हैं। लाखों वर्ष आयु कह देते हो किसकी बुद्धि में बैठती ही नहीं। बुद्धि में शास्त्रों का भूसा भरा हुआ है। अरे यह तो हम जानते हैं क्या लिखा हुआ है। तुमसे हम जास्ती पढ़ते हैं। हमने तो बहुत भक्ति की है। तुम कहते हो तुम फलाने को नहीं जानते हो। बोलो, हम तो जानते हैं। जानने बिगर मानना तो व्यर्थ है। जानने बिगर मान रखना, पूजा करना कोई काम का नहीं। इसको ही अन्धश्रद्धा कहा जाता है। बाप कहते हैं यह सभी हैं अंधे। अभी तुम अंधों की लाठी बनो। तुम भी पहले अन्धश्रद्धालु थे। तुच्छ बुद्धि पत्थर बुद्धि थे। गवर्मेन्ट भी कहता हैं सभी पतित, भ्रष्टाचारी हैं। पहले तो श्रेष्ठाचारी थे। अभी तो गवर्मेन्ट भी नहीं है। पंचायती राज्य को गवर्मेन्ट नहीं कहा जाता। इसमें तो राजा रानी का राज्य चाहिए। आदि सनातन महाराजा–महारानी थे। यह ल0ना0 कहाँ के राजे थे? कब, कितना राज्य किया? ल0ना0 ने फिर राम सीता ने राज्य किया। वह भी कितना समय किया? कुछ भी पता नहीं। बुद्धू ठहरे ना। मैं तुमको कितना गुल2 बनाता हूँ। बुद्धू को पत्थर बुद्धि कहते हैं। तुम बच्चों को अन्दर में गुप्त नशा है। तुमको कोई जानते ही नहीं हैं कि तुम क्या कर रहे हो। तुम तो योगबल से विश्व का राज्य ले रहे हो। यह भी सिर्फ तुम ही जानते हो और कोई नहीं जानते हैं। तो तुम बच्चों को अन्दर में खुशी होनी चाहिए ना हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। अभी भी बहुत मिलाप होना चाहिए। कोई ट्रेटर बन जाते हैं। माया की बन जाते हैं। तो कर ही क्या सकते हैं। भगवानुवाच हम कर ही क्या सकता हूँ। यह ड्रामा में नूँध है। उनको ट्रेटर कहा जाता है। वह क्या पद पावेंगे। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप नमस्ते।